

HIN2B-09C

(Initiation à la littérature hindi moderne)

Cours-8

मिस पाल
मोहन राकेश

वह दूर से दिखाई देती आकृति मिस पाल ही हो सकती थी।

फिर भी विश्वास करने के लिए मैंने अपना चश्मा ठीक किया। निःसन्देह, वह मिस पाल ही थी। यह तो खैर मुझे पता था कि वह उन दिनों कुल्लू में रहती हैं, पर इस तरह अचानक उनसे भेंट हो जाएगी, यह नहीं सोचा था। और उसे सामने देखकर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ कि वह स्थायी रूप से कुल्लू और मनाली के बीच उस छोटे से गांव में रही होगी। वह दिल्ली से नौकरी छोड़कर आई थी, तो लोगों ने उसके बारे में क्या-क्या नहीं सोचा था !

बस रायसन के डाकखाने के पास पहुँच कर रुक गई। मिस पाल डाकखाने के बाहर खड़ी पोस्टमास्टर से कुछ बात कर रही थीं। हाथ में वह एक थैला लिए थी। बस के रुकने पर न जाने किस बात के लिए पोस्टमास्टर को धन्यवाद देती हुई वह बस की तरफ मुड़ी। तभी मैं उतरकर सामने पहुँच गया। एक आदमी के अचानक सामने आ जाने से मिस पाल थोड़ा अचकचा गई, मगर मुझे पहचानते ही उसका चेहरा खुशी और उत्साह से खिल गया !

“रणजीत तुम ?” उसने कहा, “तुम यहाँ कहाँ से टपक पड़े ?”

“मैं इस बस से मनाली आ रहा हूँ।” मैंने कहा।

“अच्छा ! मनाली तुम कब से आए हुए थे ?”

“आठ दस दिन हुए, आया था। आज वापस जा रहा हूँ।”

“आज ही जा रहे हो ?” मिस पाल के चेहरे से आधा उत्साह गायब हो गया, “देखो कितनी बुरी बात है कि आठ-दस दिन से तुम यहाँ हो और मुझसे मिलने की तुमने कोशिश भी नहीं की। तुम्हें यह तो पता ही था कि मैं कुल्लू में हूँ।”

“हाँ, यह तो पता था, पर यह पता नहीं था कि कुल्लू के किस हिस्से में हो। अब भी तुम अचानक ही दिखायी दे गई, नहीं मुझे कहाँ से पता चलता कि तुम इस जंगल को आबाद कर रही हो ?”

“सचमुच बहुत बुरी बात है,” मिस पाल उलाहने के स्वर में बोली, “तुम इतने दिनों से यहाँ हो और मुझसे तुम्हारी भेंट आज हुई आज जाने के वक्त...।”

ड्राइवर जोर-जोर से हार्न बजाने लगा। मिस पाल ने कुछ चिढ़कर ड्राइवर की तरफ देखा और एक साथ झिड़कने और क्षमा माँगने के स्वर में कहा, “बस जी एक मिनट। मैं भी इसी बस से कुल्लू चल रही हूँ। मुझे कुल्लू की एक सीट दीजिए। थैंक यू वेरी मच!” और फिर मेरी तरफ मुड़कर बोली, “तुम इस बस से कहाँ तक जा रहे हो ?”

“आज तो इस बस से जोगिन्दरनगर जाऊँगा। वहाँ एक दिन रहकर कल सुबह आगे की बस पकड़ूँगा।”

ड्राइवर अब और जोर से हार्न बजाने लगा। मिस पाल ने एक बार क्रोध और बेबसी के साथ उसकी तरफ देखा और बस के दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए बोली, “अच्छा कुल्लू तक तो हम लोगों का साथ है ही, और बात कुल्लू पहुँचकर करेंगे। मैं तो कहती हूँ कि तुम दो-चार दिन यहीं रुको, फिर चले जाना।”

बस में पहले ही बहुत भीड़ थी। दो-तीन आदमी वहाँ से और चढ़ गए थे, जिससे अन्दर खड़े होने की जगह भी नहीं रही थी। मिस पाल दरवाजे के अन्दर जाने लगीं तो कण्डक्टर ने हाथ बढ़ाकर उसे रोक दिया। मैंने कण्डक्टर से बहुतेरा कहा कि अन्दर मेरी वाली जगह खाली है, मिस साहब वहाँ बैठ जाएंगी और मैं भीड़ में किसी तरह खड़ा होकर चला जाऊँगा, मगर कण्डक्टर एक बार जिद पर अड़ा तो अड़ा ही रहा कि और सवारी वह नहीं ले सकता। मैं अभी उससे बात ही कर रहा था कि ड्राइवर ने बस स्टार्ट कर दी। मेरा सामान बस में था, इसलिए मैं दौड़कर चलती बस पर सवार हो गया। दरवाजे से अन्दर जाते हुए मैंने एक बार मुड़कर मिस पाल की तरफ देख लिया। वह इस तरह अचकचाई-सी खड़ी थी जैसे कोई उसके हाथ से उसका सामान छीन कर भाग गया हो और उसे समझ न आ रहा हो कि उसे अब क्या करना चाहिए।

बस हल्के-हल्के मोड़ काटती कुल्लू की तरफ बढ़ने लगी। मुझे अफसोस होने लगा कि मिस पाल को बस में जगह नहीं मिली तो मैंने क्यों न अपना सामान वहाँ उतरवा लिया। मेरा टिकट जोगिन्दरनगर का था, पर यह जरूरी नहीं था कि उस टिकट से

जोगिन्दरनगर तक जाऊँ ही। मगर मिस पाल से भेंट कुछ ऐसे आकस्मिक ढंग से हुई थी और निश्चय करने के लिए समय इतना कम था कि मैं यह बात उस समय सोच भी नहीं सका था। थोड़ा-सा समय और मिलता, तो मैं जरूर कुछ देर के लिए वहाँ उतर जाता। उतने समय में तो मिस पाल से कुशल-समाचार भी नहीं पूछ सका था, हालांकि मन में उसके सम्बन्ध में जानने की उत्सुकता थी। उसके दिल्ली छोड़ने के बाद लोग उसके बारे में जाने क्या-क्या बातें करते रहे थे। किसी का ख्याल था कि उसने कुल्लू में एक रिटायर्ड अंग्रेज़ मेजर से शादी कर ली है और मेजर ने अपने सेब के बगीचे उसके नाम कर दिए हैं। किसी की सूचना थी कि उसे वहाँ की सरकार की तरफ से वजीफा मिल रहा है और वह करती वरती कुछ नहीं है, बस घूमती और हवा खाती है। कुछ ऐसे लोग भी थे जिनका कहना था कि मिस पाल का दिमाग खराब हो गया है और सरकार उसे इलाज के लिए अमृतसर के पागलखाने में भेज रही है। मिस पाल एक दिन अचानक अपनी लगी हुई पाँच सौ की नौकरी छोड़कर चली आई थी, उससे लोगों में उसके बारे में तरह-तरह की कहानियाँ प्रचलित थीं।

जिन दिनों मिस पाल ने त्यागपत्र दिया, मैं दिल्ली में नहीं था। लम्बी छुट्टी लेकर बाहर गया था। मिस पाल के नौकरी छोड़ने का कारण मैं काफी हद तक जानता था। वह सूचना विभाग में हम लोगों के साथ काम करती थी और राजेन्द्रनगर में हमारे घर से दस-बारह घर छोड़कर रहती थी। दिल्ली में भी उसका जीवन काफी अकेला था, क्योंकि दफ्तर के ज्यादातर लोगों से उसका मनमुटाव था और बाहर के लोगों से वह मिलती बहुत कम थी। दफ्तर का वातावरण उसके अपने अनुकूल नहीं लगता था। वह वहाँ एक-एक दिन जैसे गिनकर काटती थी। उसे हर एक से शिकायत थी कि वह घटिया किस्म का आदमी है, जिसके साथ उसका बैठना नहीं हो सकता।

Vocabulaire

आकृति-f forme, silhouette

चश्मा-m lunettes

निःसन्देह sans doute

खैर-f bien, bien-être

अचानक soudain

भेंट होना/करना rencontrer

विश्वास-m foi

स्थायी permanent

रूप-f forme, aspect

नौकरी-f emploi

डाकखाना-m la poste

अचकचाना s'étonner, hésiter

खिलना épanouir

टपकना égoutter, tomber comme une goutte

उत्साह-m enthousiasme

गायब होना disparaître

आबाद peuplé

उलाहना-f plainte, reproche

झिड़कना réprimander, gronder

क्रोध-m colère

बेबसी-f impuissance

कण्डक्टर-m conducteur

अड़ना s'obstiner, entraver

आकस्मिक par chance

कुशल dextre, qualifié

समाचार-m informations

उत्सुकता-f curiosité

ख्याल-m idée, pensée, s'inquiéter pour

किसी के नाम करना établir au nom de (héritage)

वजीफा-m bourse

हवा खाना prendre l'air

पागलखाना-m asile de fous

नौकरी-f emploi

त्यागपत्र-m démission

विभाग-m département

मनमुटाव-m désaffection

दफ्तर-m bureau

शिकायत-f plainte

घटिया d'ordre inférieur

किस्म-f type